Ancient Vedic Mantras and Rituals

Shrimad Bhagavad Gita Chapter -2 Shalok – 12| श्रीमद् भगवदगीता अध्याय दो – श्लोक बारह | PDF

श्लोक:12

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः |
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् || 12 ||

सरल हिंदी में भावार्थ:

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा–
हे अर्जुन! न तो कभी ऐसा हुआ कि मैं नहीं था, न तुम नहीं थे और न ही ये सभी राजा कभी अस्तित्वहीन थे; और न ही भविष्य में ऐसा होगा कि हम सब न रहें।

विस्तृत व्याख्या:

इस श्लोक के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन के शोक, भय और मानसिक भ्रम को दूर करने के लिए आत्मा के शाश्वत सत्य का उद्घाटन करते हैं। अर्जुन जिन परिजनों, गुरुओं और राजाओं के विनाश की कल्पना से व्याकुल हो रहा है, भगवान उसे यह समझाते हैं कि उसका यह शोक अज्ञान पर आधारित है।

भगवान स्पष्ट रूप से कहते हैं कि भूतकाल में कभी ऐसा समय नहीं था जब वे स्वयं, अर्जुन या युद्धभूमि में उपस्थित ये सभी राजा अस्तित्व में न रहे हों। इसी प्रकार भविष्य में भी ऐसा कोई समय नहीं आएगा जब इन सबका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। यहाँ भगवान शरीर की नहीं, बल्कि आत्मा की बात कर रहे हैं, क्योंकि शरीर तो समय के साथ जन्म लेता है और नष्ट होता है, पर आत्मा अजन्मा, अविनाशी और नित्य है।

अर्जुन देह को ही सब कुछ मानकर उसके नाश का भय कर रहा है। किंतु भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि आत्मा न तो कभी जन्म लेती है और न ही कभी मरती है। देह केवल एक वस्त्र की भाँति बदलती रहती है। इस प्रकार अर्जुन का शोक उस सत्य को न जानने के कारण उत्पन्न हुआ है, जो शाश्वत और अविनाशी है।

इस श्लोक से गीता का केंद्रीय दर्शन प्रारंभ होता है— **आत्मा की अमरता**। भगवान अर्जुन को यह बोध कराते हैं कि युद्ध में शरीर का विनाश संभव है, पर आत्मा का नहीं। इसलिए आत्मज्ञान के अभाव में किया गया शोक न केवल व्यर्थ है, बल्कि कर्तव्य से विमुख करने वाला भी है।

पदों का भावार्थ:

- **न तु एव अहं** – न तो मैं ही
- **जातु न आसम्** – कभी भी नहीं था
- **न त्वम्** – न ही तुम
- **न इमे जनाधिपाः** – और न ये सभी राजा
- **न च एव न भविष्यामः** – और न ही भविष्य में हम नहीं रहेंगे

गूढ आध्यात्मिक अर्थ:

यह श्लोक मनुष्य के अस्तित्व से जुड़े सबसे गहरे प्रश्न का उत्तर देता है— **मैं कौन हूँ?**
भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि मनुष्य स्वयं को शरीर मानकर जन्म और मृत्यु से डरता है, जबकि उसका वास्तविक स्वरूप आत्मा है, जो न समय से बंधी है, न परिवर्तन से। override अर्जुन का शोक इस कारण है कि वह आत्मा के स्थान पर शरीर से अपनी पहचान जोड़ बैठा है। भगवान का यह उपदेश बताता है कि जब तक मनुष्य स्वयं को देह मानता रहेगा, तब तक वह भय, शोक और मोह में फँसा रहेगा। जैसे ही आत्मा की नित्यता का बोध होता है, जीवन के सभी द्वंद्व शांत होने लगते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से यह श्लोक यह भी संकेत देता है कि—

- आत्मा व्यक्तिगत होते हुए भी शाश्वत है
- अस्तित्व केवल वर्तमान तक सीमित नहीं है
- मृत्यु अंत नहीं, केवल परिवर्तन है
- आत्मज्ञान ही दुःखों से मुक्ति का मार्ग है

यह श्लोक गुरु और शिष्य के संवाद में वह क्षण है, जहाँ अज्ञान का अंधकार हटने लगता है और ज्ञान का प्रकाश उदित होता है। यही कारण है कि इसे गीता के सबसे आधारभूत और महत्त्वपूर्ण श्लोकों में गिना जाता है।

आधुनिक जीवन में संदेश:

आज का मनुष्य भी अर्जुन की भाँति भय, हानि और भविष्य की चिंता से ग्रस्त रहता है। यह श्लोक हमें सिखाता है कि जब

हम स्वयं को केवल शरीर या परिस्थितियों से जोड़ते हैं, तब दुःख बढ़ता है। आत्मा की नित्यता को समझने से जीवन में स्थिरता, साहस और संतुलन उत्पन्न होता है।

RELATED ARTICLE

Chapter -2 Shalok – 10

Chapter -2 Shalok – 11

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS